

डॉ. जिम स्पीगल, धर्म का दर्शन, सत्र 11, दिव्य गुप्तता

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स स्पीगल धर्म के दर्शन पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 11 है, दिव्य गुप्तता।

ठीक है, अब हम अपना ध्यान आस्तिकों और विशेष रूप से ईसाइयों के सामने आने वाली दार्शनिक समस्या की ओर मोड़ने जा रहे हैं, जो पिछले कुछ दशकों में शैलेनबर्ग नामक विद्वान के काम के माध्यम से उभरी है, और यह दिव्य गुप्तता की समस्या है, जिसे कुछ लोग बुराई की समस्या का एक पहलू मानते हैं, अन्य इसे विशुद्ध रूप से ज्ञानमीमांसा समस्या मानते हैं, और इसका संबंध केवल इस तथ्य से है कि ईश्वर ने खुद को स्पष्ट नहीं किया है और उसका अस्तित्व सभी के लिए स्पष्ट नहीं है।

क्या यह एक समस्या नहीं है? और हम इस तथ्य को इस विश्वास के साथ कैसे जोड़ सकते हैं कि हम यह भी मानते हैं कि ईश्वर चाहता है कि लोग जानें कि वह वास्तविक है? इसलिए, पीटर वैन इनवेगेन ने ईश्वरीय गुप्तता की समस्या को इस तरह से सारांशित किया: यदि ईश्वर अस्तित्व में है, तो यह हम मनुष्यों के लिए जानना बहुत महत्वपूर्ण बात होगी। यदि ईश्वर अस्तित्व में है, तो वह अपने अस्तित्व के स्पष्ट संकेत दे सकता है। इसलिए, यदि वह अस्तित्व में है, तो ईश्वर अपने अस्तित्व के स्पष्ट संकेत देगा।

हालाँकि, ईश्वर के अस्तित्व के ऐसे कोई स्पष्ट संकेत नहीं हैं। इसलिए, ईश्वर के अस्तित्व पर संदेह करने का कारण है। तो, हम इस समस्या को कैसे हल करें? यह मानते हुए कि ये सभी आधार सही हैं, यह एक वैध तर्क है, और फिर हम यहाँ ईश्वरवाद में तर्कसंगत विश्वास के लिए एक तरह की आपत्ति का सामना करते हैं।

वैन इनवेगेन ने कहा कि बुराई के अभाव में भी, ईश्वरीय गुप्तता की समस्या हो सकती है। आप एक ऐसी दुनिया की कल्पना कर सकते हैं जिसमें कोई भी व्यक्ति कभी कोई पाप या नैतिक बुराई नहीं करता; कोई चोरी नहीं होती, कोई झूठ नहीं होता, और कोई बलात्कार या हत्या नहीं होती। आप कल्पना कर सकते हैं कि उस दुनिया में कोई दुख नहीं होता, लोग शारीरिक रूप से बीमार नहीं होते, कोई कैंसर नहीं होता, कोई हृदय रोग नहीं होता।

वास्तव में, कोई शारीरिक चोट नहीं है। यहां तक कि उस दुनिया में भी जहां कोई दुख नहीं है और कोई नैतिक बुराई नहीं है, फिर भी ईश्वरीय गुप्तता की समस्या हो सकती है। और लोग सोच रहे हैं, आप जानते हैं, हम यहां कैसे पहुंचें? भले ही उस संदर्भ में कई लोग अभी भी ईश्वर में विश्वास करते हैं, फिर भी ऐसे अन्य लोग होंगे जो अनिश्चित हो सकते हैं।

इसलिए, ईश्वरीय गुप्तता की समस्या बुराई की समस्या से अलग प्रतीत होती है। जैसा कि वैन इनवेगेन कहते हैं, एक ऐसी दुनिया में जहाँ कोई वास्तविक पीड़ा नहीं है, ईश्वर की गुप्तता की समस्या विशुद्ध रूप से ज्ञानमीमांसा संबंधी समस्या है। वैन इनवेगेन इस धारणा को अस्वीकार

करते हैं कि ईश्वर को इस बात की परवाह नहीं है कि लोग उस पर विश्वास क्यों करते हैं, कि यह उसके लिए ज़ोर देने का एक बिंदु है, और यह इस समस्या को हल करने के लिए आवश्यक है।

भगवान को इस बात की परवाह है कि लोग उस पर कैसे विश्वास करते हैं या वे उस पर क्यों विश्वास करते हैं। और इसलिए, सर्वव्यापी चमत्कार, जैसे आकाश में निरंतर दिव्य संदेश या ऐसा कुछ, वैन इनवेगन कहते हैं, केवल भगवान में एक साधारण विश्वास को प्रेरित करेगा, व्यक्तिगत परिवर्तन को नहीं। भगवान महत्वपूर्ण व्यक्तिगत परिवर्तन में रुचि रखते हैं, और उनका छिपा होना इसमें योगदान देता है।

यह ऐसे परिवर्तनों या ऐसे परिवर्तनों की प्रकृति को अन्यथा की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण बनाता है। इस मुद्दे पर विचार करने वाले एक अन्य विद्वान माइकल मरे हैं। वह इस मुद्दे पर एक स्वतंत्र इच्छा थियोडिसी लागू करते हैं और पूछते हैं, मानव स्वतंत्र इच्छा के लिए क्या आवश्यक है? जब बात आती है, आप जानते हैं, ईश्वर का स्वतंत्र चुनाव या आलिंगन और ईश्वर का अनुसरण करने, उनकी आज्ञा मानने और ईश्वर के साथ संबंध रखने के निर्णय की, तो ईश्वर को स्वतंत्र रूप से चुनने और उनका अनुसरण करने के लिए हमारे लिए आवश्यक शर्तें क्या हैं? मरे कहते हैं कि कुछ निश्चित शर्तें हैं जिन्हें प्राप्त करने की आवश्यकता है, जैसे कि, विशेष रूप से, या मुझे खेद है, कुछ ऐसी शर्तें हैं जो नहीं होनी चाहिए, विशेष रूप से किसी खतरे के संदर्भ में मजबूरी, है ना? हमें स्वतंत्र रूप से ईश्वर को चुनने के लिए, हमें ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए, जैसे कि किसी प्रकार की धमकी जो इतनी पकड़ लेती है कि हम वास्तव में ईश्वर में विश्वास करने और उनका अनुसरण करने के अलावा कुछ नहीं कर सकते।

तो, यह सवाल उठता है। महत्वपूर्ण खतरा क्या है? और ऐसे कई कारक हैं जो खतरे के महत्व से संबंधित हैं, जिन पर मरे चर्चा करते हैं, और यहाँ उनकी दिलचस्पी यह देखने में है कि भगवान नरक के खतरे को कैसे कम कर सकते हैं, आप जानते हैं, उन लोगों के लिए तीव्र पीड़ा और दंड का खतरा जो उनका अनुसरण नहीं करते हैं। यदि वह उस खतरे को कम कर सकता है, आप जानते हैं, जहाँ यह इतना महत्वपूर्ण नहीं है, तो हमारे पास भगवान को चुनने की अधिक स्वतंत्रता होगी।

हम ऐसा महसूस नहीं करेंगे, और हम इतने मजबूर नहीं होंगे। तो, यहाँ कुछ कारक हैं जो खतरे के महत्व से संबंधित हैं जो कुछ तरीकों को उजागर करते हैं जिनसे भगवान संभावित रूप से खतरे के महत्व को कम कर सकते हैं या खतरे को कम मजबूत बना सकते हैं। यह उस सीमा से संबंधित है जिस तक कोई व्यक्ति खतरे के परिणामों को अपने लिए हानिकारक मानता है, और यह सिर्फ खतरे की ताकत से संबंधित है।

दूसरा खतरा आसन्न है, जो कि वह डिग्री है जिस तक कोई व्यक्ति कुछ निश्चित परिस्थितियों में परिणामों के आने की अपेक्षा करता है। मरे ने तीन तरीकों का उल्लेख किया है जिनसे हम खतरे के आसन्न होने के बारे में बात कर सकते हैं। एक है संभावित खतरा आसन्न; यदि मैं, आप जानते हैं, ईश्वर की ओर नहीं मुड़ता हूँ तो परिणामों के आने की कितनी संभावना है? अस्थायी खतरा आसन्न, आप जानते हैं, ईश्वर को अस्वीकार करने के बाद यह कितनी जल्दी होगा, और ज्ञानात्मक खतरा आसन्न, इसका संबंध इस बात से है कि खतरा कितना स्पष्ट और स्पष्ट है, और

फिर अंत में, धमकी दिए जाने वाले व्यक्ति की असभ्यता का विचार है, और इसका संबंध इस बात से है कि धमकी दिए जाने वाले व्यक्ति द्वारा अपनी भलाई की किस हद तक उपेक्षा किए जाने की संभावना है।

यदि कोई व्यक्ति वास्तव में अपने भाग्य की परवाह नहीं करता है, तो, आप जानते हैं, अंतिम पीड़ा का कोई भी खतरा उन्हें इतना प्रभावित नहीं करेगा, इसलिए यह खतरे को कम करने का एक तरीका होगा, यह सुनिश्चित करना कि लोग वास्तव में अपने अंतिम भाग्य की परवाह न करें। तो, वे अलग-अलग चर हैं जिनकी चर्चा मरे ने की है जो खतरे के महत्व से संबंधित हैं। अब मरे ने निष्कर्ष निकाला है कि खतरे में मजबूरी की डिग्री खतरे की ताकत और आसन्नता के सीधे आनुपातिक है और खतरे की बेरुखी के व्युत्क्रमानुपाती है।

खतरे की ताकत जितनी ज़्यादा होगी, खतरा उतना ही ज़्यादा आसन्न होगा, फिर मजबूरी की डिग्री बढ़ जाती है। एक व्यक्ति जितना ज़्यादा लापरवाह होता है, ठीक है, उतना ही कम उसे अपने अंतिम कल्याण की परवाह होती है, फिर कम मजबूरी, जितना ज़्यादा उसे अपने कल्याण की परवाह होती है, फिर जितना ज़्यादा खतरा होता है, जितना कम उसे परवाह होती है, उतना ही कम खतरा होता है। इसलिए, दुष्ट जीवन के लिए नरक के खतरे के सामने मानवीय स्वतंत्रता संभव होने के लिए, इस खतरे को किसी तरह कम किया जाना चाहिए, और इसलिए इन तीन कारकों में से कौन सा खतरे के महत्व को कम करने के लिए कम किया जा सकता है? तो, क्या खतरे की ताकत वह है जिसे भगवान ने खतरे के महत्व को कम करने के लिए चुना है? मरे नोट करते हैं नं.

अनंत नरक, अनंत नरक की धमकी, एक धमकी जितनी मजबूत हो सकती है, है न? आप किसी ऐसे व्यक्ति को धमका सकते हैं जिसे आप पसंद नहीं करते हैं, आप जानते हैं, मुकदमा करके, या उन्हें शारीरिक रूप से धमकाकर, आप जानते हैं, मैं आपकी नाक पर मुक्का मारने जा रहा हूँ, लेकिन किसी भी इंसान में किसी को अनंत नरक की धमकी देने की क्षमता नहीं है, लेकिन भगवान ने शास्त्रों में बार-बार ऐसा किया है, इसलिए उन्होंने वह रास्ता नहीं चुना। धमकी दिए जाने वाले व्यक्ति की बेपरवाही के बारे में क्या? क्या भगवान ने ऐसा बनाया है कि लोग वास्तव में अपने अंतिम कल्याण की परवाह नहीं करते हैं? नहीं, हम अपने अंतिम कल्याण की परवाह करते हैं, और अगर भगवान ने ऐसा किया भी, तो यह गैर-जिम्मेदाराना होगा क्योंकि अपने अस्तित्व, अपने स्वयं के कल्याण के लिए चिंता करना एक अच्छा और एक गुण है। तो, आसन्न खतरे के बारे में क्या? धमकी दिए जाने वाले व्यक्ति की ताकत और बेपरवाही, अगर उसने उन्हें इस तरह से समायोजित नहीं किया कि खतरे का महत्व कम हो जाए, तो इसका आसन्न खतरे से कोई लेना-देना होना चाहिए।

संभावित खतरे के बारे में क्या? नहीं, शास्त्रों में यह स्पष्ट है कि जो लोग दुष्ट हैं और ईश्वर को अस्वीकार करते हैं, उनके लिए नरक में पीड़ा निश्चित है। यह निश्चित रूप से शास्त्रों में स्पष्ट है, इसलिए ईश्वर ने खतरे के महत्व को इस तरह से कम नहीं किया। अस्थायी खतरे के महत्व के बारे में क्या? मरे ने कहा कि यह कुछ हद तक प्रासंगिक है क्योंकि जो लोग अवज्ञाकारी और दुष्ट हैं, उन्हें तुरंत नरक में नहीं डाला जाता है।

अभी भी समय है, आपके पास अभी भी समय है, हम नहीं जानते कि कितना समय है। इस तरह की अनिश्चितता पैदा होती है कि सिर्फ अस्थायी विचारों से खतरा कितना कम हो जाता है। लेकिन चूँकि लोगों को तुरंत नरक में नहीं डाला जाता, इसलिए यह खतरा थोड़ा कम जरूर होता है।

लेकिन यह तीसरा कारक, जिस पर मेरे ध्यान केंद्रित करते हैं, वह मुख्य तरीका है जिससे ईश्वर खतरे के महत्व को कम करता है, और वह है ज्ञानात्मक खतरे का आसन्न होना। यह वह साधन है जिसके द्वारा ईश्वर, मेरे के अनुसार, खतरे के महत्व से बाध्यता को कम करता है। ईश्वर खुद को छिपाकर खतरे को ज्ञानात्मक रूप से अस्पष्ट बना देता है।

तो, यहाँ मेरे के तर्क का निष्कर्ष यह है : ऐसा लगता है कि ईश्वरीय गुप्तता, आज्ञा मानने या न मानने की मानवीय स्वतंत्रता को संरक्षित करने के इस महत्वपूर्ण उद्देश्य को पूरा करती है। तथ्य यह है कि ईश्वर छिपा हुआ है, या कम से कम कुछ हद तक छिपा हुआ है, उसके अस्तित्व के बारे में एक निश्चित अस्पष्टता है जो नरक में अंतिम दंड के खतरे को कम करती है, जहाँ ईश्वर को चुनने वाले लोग अधिक स्वतंत्रता से ऐसा करने में सक्षम होते हैं। वे कम बाध्य होते हैं क्योंकि ईश्वर एक निश्चित सीमा तक छिपा हुआ है।

तो, यह इसे देखने का एक दिलचस्प तरीका है। कौन जानता है कि परमेश्वर का मन क्या है, वह क्या सोच रहा था, या ऐसा क्यों है? जैसा कि भविष्यवक्ता यशायाह कहते हैं, निश्चित रूप से आप एक ऐसे परमेश्वर हैं जो खुद को छिपाते हैं। यह पुराने नियम के एक भविष्यवक्ता के मुंह से निकला है, जो इस सब के आधार को स्वीकार करता है, कि परमेश्वर कुछ हद तक छिपा हुआ है, शायद एक महत्वपूर्ण हद तक।

लेकिन जहाँ तक मेरे का सवाल है, यह एक लाभ होगा। यह खतरे के महत्व को कम करता है और इसलिए, ईश्वर को चुनने में मानवीय स्वतंत्रता की रक्षा या सुनिश्चित करता है। अब, लवरिंग नामक एक विद्वान ने इस मुद्दे पर विचार किया है और मेरे के दृष्टिकोण की आलोचना की है।

उनका कहना है कि मेरे का दृष्टिकोण अंततः विफल हो जाता है और वास्तव में यह निष्कर्ष निकालने के लिए आधार प्रदान करता है कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है। और यहाँ लवरिंग का तर्क है। सबसे पहले, वह मेरे के तर्क का सारांश प्रस्तुत करते हैं।

यह मूल रूप से यह कह रहा है। सबसे पहले, हमारे पास नैतिक रूप से महत्वपूर्ण चरित्र विकसित करने की क्षमता है। दूसरा, अगर ईश्वर छिपा हुआ नहीं है, तो हमारे पास नैतिक रूप से महत्वपूर्ण चरित्र विकसित करने की क्षमता नहीं है क्योंकि हम वैसा ही विश्वास करने और वैसा ही कार्य करने के लिए बाध्य होंगे जैसा हम करते हैं।

इसलिए, इस तरह के नैतिक विकास को संभव बनाने के लिए ईश्वर को छिपा होना चाहिए। अब, लवरिंग के अनुसार, मेरे कुछ प्रमुख मेटा-नैतिक धारणाएँ बनाते हैं। एक यह है कि नैतिकता और ईश्वर के आदेशों के बीच एक सहसंबंधी संबंध है।

और दूसरा, कि कार्यों की नैतिक स्थिति मनुष्य के विश्वास से निर्धारित नहीं होती। लवरिंग के अनुसार, हालांकि मजबूर होना नैतिक रूप से महत्वपूर्ण चरित्र विकसित करने की क्षमता खोने

का एक तरीका है, लेकिन यह एकमात्र तरीका नहीं है। इसलिए, वह यह स्वीकार कर रहे हैं कि मरे सही हैं कि जबरदस्ती या मजबूरी हमारे अच्छे नैतिक चरित्र को विकसित करने की क्षमता से समझौता करेगी।

लेकिन ऐसा होने के और भी तरीके हैं, और अगर आप मरे के दृष्टिकोण को अपनाते हैं, तो उनका कहना है कि इस संबंध में एक और खतरा उभर कर आता है। लवरिंग का कहना है कि एक और तरीका जिससे आप नैतिक रूप से महत्वपूर्ण चरित्र विकसित करने की अपनी क्षमता खो सकते हैं, वह है जिसे वे कार्यों की नैतिक स्थिति के बारे में अचूक अज्ञानता कहते हैं। अगर आप इस बारे में गैर-दोषपूर्ण तरीके से अज्ञानी हैं कि आपको कैसे जीना चाहिए, तो आप नैतिक रूप से महत्वपूर्ण चरित्र विकसित करने में सक्षम नहीं होंगे।

दूसरे शब्दों में, अच्छे और बुरे कार्यों के बीच स्वतंत्र रूप से चुनाव करना नैतिक चरित्र के विकास के लिए एक आवश्यक लेकिन पर्याप्त शर्त नहीं है। एक और आवश्यक शर्त नैतिक रूप से अच्छे कार्यों को चुनने का इरादा है। और कोई भी व्यक्ति अच्छा कार्य करने का इरादा नहीं कर सकता है यदि वे नहीं जानते कि अच्छा क्या है, है ना? इसलिए, आपको यह जानना होगा कि अच्छा क्या है।

लवरिंग के अनुसार, मरे यह नहीं देख पाते कि अगर कोई व्यक्ति इस बात से पूरी तरह अनभिज्ञ है कि कौन से कार्य सही हैं और कौन से गलत। क्योंकि नैतिक इरादों के लिए अच्छाई और बुराई के बारे में जागरूकता ज़रूरी है। लेकिन अगर ईश्वर छिपा हुआ है, तो यह मुख्य बिंदु है: अगर ईश्वर छिपा हुआ है, तो कुछ लोग उचित रूप से ईश्वर में विश्वास करना छोड़ देंगे और इस तरह अच्छाई के बारे में पूरी तरह अनभिज्ञ हो जाएंगे।

वे नैतिक शून्यवादी बन जाएंगे। तो, दिव्य गुप्तता का यह पूरा विचार एक हाथ से लेता है और दूसरे हाथ से देता है। शायद, आप जानते हैं, मान लें कि यह खतरे के महत्व को कम करके मजबूरी को कम करता है, लेकिन फिर यह नैतिक अच्छाई के बारे में निश्चितता या आत्मविश्वास को भी दूर कर देता है।

दूसरे शब्दों में, लोग अच्छे काम करने का इरादा नहीं कर पाएंगे क्योंकि उन्हें विश्वास नहीं होगा कि कोई भी वास्तव में अच्छा काम होता है, और इसलिए, वे नैतिक रूप से विकसित नहीं हो पाएंगे। इसलिए, लवरिंग के अनुसार, मरे दोनों तरह से नहीं हो सकते। लवरिंग ने निष्कर्ष निकाला कि यदि ईश्वर छिपा हुआ है, तो हमारे पास नैतिक रूप से महत्वपूर्ण चरित्र विकसित करने की क्षमता नहीं है, और यह एक भयानक नुकसान है।

इस प्रकार, चूंकि ईश्वर का छिपा होना और ईश्वर का न छिपा होना दोनों ही इस बात का संकेत देते हैं कि हम नैतिक रूप से महत्वपूर्ण चरित्रों का विकास नहीं कर सकते, तो उस पहले प्रस्ताव के साथ विरोधाभास कि हम नैतिक रूप से महत्वपूर्ण चरित्रों का विकास कर सकते हैं, अपरिहार्य है। इसलिए, लवरिंग इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि ईश्वर का अस्तित्व नहीं है। यह वास्तव में नास्तिकता के लिए एक तरह का तर्क है।

तो, हम इस तर्क के बारे में क्या कहें? ईश्वर यह कैसे सुनिश्चित कर सकता है कि लोग नैतिक अच्छाई को जानें, बिना खुद को इतना स्पष्ट और स्पष्ट किए कि हम उसे चुनने के लिए बाध्य हों? हम ईश्वर की वास्तविकता से अभिभूत हैं, और इसलिए, हमारे पास उसे चुनने की कोई वास्तविक स्वतंत्रता नहीं है। ईश्वर ऐसा कैसे कर सकता है? और एक ऐसी चीज है जिसे लवरिंग अनदेखा करता है जो मुझे लगता है कि वास्तव में उसके तर्क में कमजोरी है, और वह मूल रूप से प्राकृतिक कानून का विचार है, जो शास्त्र में एक बहुत ही स्पष्ट विषय है कि ईश्वर ने मानव हृदय पर सही और गलत की बुनियादी समझ लिखी है, अच्छा क्या है। उन्होंने इसे मानवीय समझ में बुना है ताकि लोग मूल रूप से सही और गलत, अच्छे और बुरे के बीच अंतर को समझ सकें।

बुनियादी सही और गलत, पुण्य और पाप, अच्छाई और बुराई, तथा अच्छाई और बुराई के बीच का अंतर जानने के लिए आपको ईश्वर से लिखित रहस्योद्घाटन की भी आवश्यकता नहीं है। इसलिए, लवरिंग इसे खारिज करते हैं। वह इस पर संक्षेप में विचार करते हैं, लेकिन वे उस दृष्टिकोण के केवल एक संस्करण पर विचार करने के बाद इसे बहुत जल्दबाजी में खारिज कर देते हैं, जो प्राकृतिक व्यवस्था के माध्यम से नैतिक सत्य के बारे में दिव्य रहस्योद्घाटन प्राप्त करना है।

लेकिन फिर, भगवान ने जिस तरह से मानव मस्तिष्क का निर्माण किया है, उसके माध्यम से वह हमारे ऑपरेटिंग सिस्टम, हमारी संज्ञानात्मक संरचना में सही और गलत की एक तरह की समझ क्यों नहीं बना सकता? तो मैं यही कहूंगा, आप जानते हैं, मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही सीधा और प्रशंसनीय दृष्टिकोण है। संभावना है कि भगवान ने सभी लोगों को विवेक या दिल पर लिखे भगवान के कानून के माध्यम से बुनियादी नैतिक सत्य की सहज जागरूकता दी है। तो, यह एक आलोचना होगी जिसे मैं लवरिंग के तर्क के खिलाफ लाऊंगा। तो यह दिव्य गुप्तता के बारे में थोड़ा सा है।

यह डॉ. जेम्स स्पीगल द्वारा धर्म के दर्शन पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 11 है, दिव्य गुप्तता।